कवि-परिचय :

नाम : परेश सिन्हा

जनम-तिथि : 13.1.1936

जनम-अस्थान : सिंगरियावाँ, फतुहाँ (शाहजहाँपुर), पटना

निवास : बुद्ध नगर, पथ-3/4 दक्षिणी चाँदमारी, पटना-20

ई रेलवे विभाग के लेखा अधिकारी पद से अवकास प्राप्त कयलन। ई 'सरहलोक' पत्रिका के संपादन भी कैलन।

हिन्दी में 'जबड़ों की छाँह में', 'उत्तर दो यक्ष' आउ 'हम शापित लोकतंत्र' इनकर रचना परकासित हे। एगो कहानी संगरह "तीन तेरह लोग आउ नाट्य संगरह" ''गांधी नहीं मरेगा" छपल हे। बिहार राष्ट्रभासा परिसद् से इनका साहित साधना पुरस्कार मिलल हे। ई 1974 के जे.पी. आंदोलन में सक्रिय हलन।

"भूलल बिसरल गाँव" में ई बतौलन हे कि गाँव के जिनगी कइसन हल आउ आज वही आदर्स गाँव के हालत कइसन बिगड़ गेल हे। ई सब देख के कवि दुखी हे आउ अप्पन भूलल-बिसरल गाँव के इयाद कर रहल हे। ई ओकर पूरा चित्र खिंचलन हे ।

भूलल-बिसरल गाँव

एही हे हम्मर गाँव के टीसन
आउर ठीक सटले
पहलवान नियन छाता फुलौले
सूतल हे ई बाहा

ओकरा ऊपर न जानी
कहिना से खड़ा हे
ई मेहराबवाला बुढ़वा पुल

दउड़इत-हाँफइत, खेलइत-कूदइत
जेकरा पार करके हजारन बेर
गाड़ी पकड़ेला टीसन अइलूँ हे

देखे में तो सब्भे कुछ
पहिलहीं नियन लगऽ हे
बाकि न तो अब ऊ पुल हे
न ऊ टीसन

ई केवाल मट्टीवाला कच्चा रस्ता गाँवे जाहे,
केतना-केतना बेर न गोर पिछुलल हे एकरा पर,
धुरखेरी खेलल नियन कादो सनल देह लेले
घरे गेलूँ हे
तऽ माय बिगड़इत, रिसिआइत, दुलारइत दउड़ल हे

अप्पन किसन-कन्हइया के नहाबे-पोछे ला
बाल्टी भर पानी लोटा लेके
आउर न तो धकिया के ले गेल हे
खाँड़ में इनार पर
बाकि .....
मायो कहाँ हथ अब,
बचल हे उन्हकर इयाद

ममता उपलायल आँख से
एकटक निहारइत मुरती
हम माथा टेकले खड़ा ही हाथ जोड़ले
कहाँ चल गेल माय?

जब हेरा जाहे कोनो चीज-बतुस, अदमी आउ रिस्ता
तबे पता चलऽ हे ओकर महातम,
एही हे हम्मर चरहजरिया मौजावाला गाँव,

रंग-रूप में पहिले से ढेर सुत्थर,
सहर के बगल-बच्चा नियन सरूप धइले
तार-खम्हा आउर पक्का मकान

ढेर-सन का-न-का बन-सुन गेल हे
बाकि सुनऽ ही तार में बिजली न आवे,
चल रहल हे गाँवे में ढेर सा मुकदमा,
'गैर मजरुआ आम' ला मारा-मारी
बन गेल हे सभन जाति के भितरिया गोल

फूसो में घरे-घर कट्टा खोंसल हे,
अब 'पीरू-चा' के दलान पर
न तो लड़कन के ठट्ठ हे
न धून बाबा के मड़इया पर
बुढ़वन के जमात

सब्भे के अप्पन-अप्पन गनित,
अप्पन-अप्पन भूगोल,
आपुस के बोलल-बतियावल
हुक्का-पानी, हँसी-ठट्ठा
एगो भूलल-बिसरल इयाद बन के कचोट रहल हे

अब न ऊ गाँव हे न लोग
आउर हमहूँ ओही कहाँ रह गेली हे

जउन धूरी-गर्दा में लोट-पोट के जुआन भेली,
ओही पर बइठे में मीन-मेख में डूबल हम्मर मन
सुभीता खोज रहल हे

जा रे मन! तू भुला गेलऽ
माय के अँचरा आउर गोदी में पड़ल धूरी तो

आसीस के अच्छत होवऽ हे,
तनी आउर नेवऽ, ओकरा माथे लगावऽ,
बिना जड़ी-सोरी के कउन पेड़
अकास छूलक हे!

अभ्यास-प्रस्न

मौखिक :

1. कवि के भूलल बिसरल गाँव काहे इयाद आ रहल हे?
2. कवि के बीतल जीवन के का-का इयाद आ रहल हे?
3. आज गाँव में मारामारी काहे हो रहल हे?
4. कवि जुआन भेल जिनगी काहे इयाद कर रहल हे?

लिखित :

1. कवि के परिचय दऽ आउ उनकर दूगो रचना के नाम बतावऽ।
2. कवि गाँव के बीतल समय के बरनन में का-का कहलक हे?
3. आज गाँव के स्थिति काहे खराब हो गेल हे?
4. नीचे लिखल पद्यांस के सप्रसंग व्याख्या करऽ।

(क) देखे में तो सब्भे कुछ
पहिल ही नियन लगऽ हे
बाकि न तो अब ऊ पुल हे
न ऊ टीसन

(ख) जारे मन तू भुला गेलऽ
माय के अँचरा आउर गोदी में परल धूरी तो–
आसीस के अच्छत होवऽ हे
तनी आउर नेवऽ ओकरा माथे लगावऽ।

5. नीचे लिखल के भाव बतावऽ :

(क) पहलवान नियन छाती फुलौले
सूतल हे ई बाहा

(ख) ई केवाल मट्टीवाला कच्चा रस्ता गाँवे जा हे

(ग) ममता उपलायल आँख से एकटक निहारइत मुरती

(घ) रूप-रंग में पहिले से ढेर सुत्थर

(च) गैर मजरुआ आम ला मारामारी

(छ) फूसो में घरे-घर कट्टा खोंसल हे।

(ज) एगो भूलल-बिसरल इयाद बन के कचोट रहल हे

(झ) जउन धूरी-गर्दा में लोट-पोट के जुआन भेलो

(ट) बिना जड़ी-सोरी के कौन पेड़ अकास छूलक हे

6. कविता के भाव आउ सिल्प-सौंदर्य बतावऽ।

7. कविता के सारांस लिखऽ।

भासा-अध्ययन :

1. कविता में आयल तत्सम सबद चुन के लिखऽ ।

2. नीचे लिखल के पर्यायवाची सब्द दऽ :

घर, कन्हइया, रिस्ता, बिजली, माथा, अकास

3. नीचे लिखल सबद से बिसेसन बनावऽ :

गाँव, धूरी, बच्चा, जाति, बूढ़ा, भूगोल

4. नीचे लिखल मुहावरा के परयोग वाक्य में करऽ ताकि ओकर अरथ स्पस्ट हो जाय :

छाती फुलाना, धकियाना, हाथ जोड़ना, हुक्का-पानी बन्द कर देना, हाथ लगना, मीन-मेख करना, माथ लगाना, अकास छूना

5. नीचे लिखल सबद से वाक्य बनावऽ :

हाँफइत, कच्चा, दलान, भूलल, बिसरल

6. पाठ से नीचे एगो सहचर सबद चुन के लिखल जा रहल हे, सेस सहचर सबद तूँ चुन के बातवऽ :

(क) भूलल-बिसरल (ख) .....

(ग) ..... (घ) .....

(च) ..... (छ) .....

योग्यता-विस्तार :

1. भूलल- बिसरल गाँव से मिलइत-जुलइत भाव वाला एगो कविता चुनके लावऽ आउ कलास में काव्य पाठ करऽ।
2. अप्पन इस्कूल में गाँव के "दुरदसा आउ सुधार के उपाय" पर विचार-गोस्ठी के आयोजन करऽ। एकरा में विद्यालय के प्रधानाध्यापक के सहजोग लऽ।
3. तू जउन गाँव में जनमलऽ ऊ गाँव के बारे में जथार्थ इस्थिति के बरनन करइत अप्पन मित्र के एगो चिट्ठी लिखऽ ।

सब्दार्थ :

रिसिआइत	:	बिगड़ित
धकिया के	:	ठेल के
उपलायल	:	उपरायल
एकटक	:	लगातार
निहारइत	:	देखइत
सुत्थर	:	सुंदर
गैरमजरुआ आम	:	सरकारी जमीन
सुभीता	:	सुबिधा
जुआन	:	जवान